

छायावाद

डॉ. कुमारी सीमा

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
एस. एन. एस. आर. के कॉलेज, सहरसा.
भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

प्रस्तुति

डॉ. कुमारी सीमा

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
एस. एन. एस. आर. के कॉलेज, सहरसा.
भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

पाठ का उद्देश्य

छायावादी काव्यान्दोलन की पृष्ठभूमि से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे।

छायावाद के विकासात्मक स्वरूप से पूरी तरह अभिज्ञ हो सकेंगे ।

छायावाद की परिवेश और उसकी परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे।

छायावाद की विभिन्न परिभाषाओं के स्वरूप और महत्व से परिचित हो सकेंगे ।

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों से पूरी तरह परिचित हो सकेंगे ॥

छायावाद पर लगे कतिपय आरोपों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में आधुनिक काल (1900 से 1980 वि.सं.) की एक प्रमुख नवीन प्रवृत्ति के आधार पर उस कालखंड को गद्यकाल की संज्ञा देते हुए उसे दो खण्डों में विभाजित किया।

गद्य खंड

काव्य खंड

पुरानी धारा

नई धारा

नई धारा का नाम व्यंग्यार्थ रूप में ही सही छायावाद शुक्ल जी ने रखा और इस रूप में ही यह नाम प्रचलित हो गया।

आधुनिक हिंदी कविता में छायावाद को एक ऐसे आंदोलन के रूप में जाना जा सकता है, जिसे आलोचना-प्रत्यालोचना, प्रशंसा और निंदा दोनों स्थितियों का सर्वाधिक शिकार होना पड़ा है।

प्रशंसा करनेवालों
नंददुलारे वाजपेयी,
डॉ. नगेंद्र,
शांतिप्रिय द्विवेदी आदि,

आलोचना करनेवालों
आचार्य रामचंद्र शुक्ल,
रामविलास शर्मा,
डॉ. देवराज
और मुक्तिबोध आदि

भाषा, भाव, कथ्य, शिल्प आदि सभी दृष्टियों से छायावादी कविता एक कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में रेखांकित की जा सकती है। कल्पना, विद्रोह, भावप्रवणता, प्रेम, सौंदर्य, निराशावाद, पलायनप्रवृत्ति, प्रतीकात्मकता, रहस्यपरकता, कोमल भावाभिव्यक्ति आदि रोमेंटिक एवं स्वछंदतावादी काव्यप्रवृत्तियों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के कारण छायावादी काव्य को रोमेंटिक काव्य अथवा स्वछंदतावादी काव्य कहने का भी आग्रह किया जाता है , जिसका स्वाभाविक विकास द्विवेदीयुगीन आदर्शवादी काव्याभिव्यक्ति के पश्चात् हुआ ।

रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद को द्विवेदीयुगीन कविता की प्रतिक्रिया कहा है,

डॉ. नगेंद्र ने शुक्ल जी के उक्त कथन का विरोध कर, छायावादी काव्य को, 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहा' जिसे छायावाद के संदर्भ में आज प्रायः उद्धृत किया जाता है।

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

छायावादी कविता की कमोबेश सारी प्रवृत्तियाँ (सौंदर्य, प्रेम, नारी सौंदर्य, प्रकृति चित्रण, कल्पना इत्यादि) द्विवेदीयुगीन कविता में अपने आरंभिक रूप में ही सही, विद्यमान हैं। हाँ, रहस्यपरकता और प्रतीकों का अतिशय प्रयोग छायावादी काव्य को कुछ ऐसा स्वरूप अवश्य प्रदान करता है, जो उसे द्विवेदीयुगीन कविता से किंचित् अलग भावभूमि पर प्रतिष्ठित करता है।

छायावादी कविता पर आचार्य शुक्ल का आरोप

आचार्य शुक्ल ने छायावाद को बंगला साहित्य अथवा पाश्चात्य साहित्य के अनुकरण और प्रभाव में रोमेंटिसिज्म का रूपांतर भी मानने का आग्रह किया है, जबकि सचाई यह है कि छायावादी काव्य अपने ही देशकाल के परिवेश और परिस्थितियों की स्वाभाविक उद्भूति है, जिस पर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ विविध साहित्यिक चिंतन-मनन का भी प्रभाव पड़ा है।

डॉ. नगेंद्र ने इसका विरोध करते हुए कहा कि “ब्रिटिश साम्राज्य की अचल सत्ता और समाज में सुधारवादी दृढ़ नैतिकता, असंतोष एवं विद्रोह इन (प्रतिक्रियात्मक) भावनाओं की बहिर्मुखी अभिव्यक्ति का अवसर नहीं देते थे।-- वे अंतर्मुखी होकर धीरे-धीरे अवचेतन में जाकर बैठ रही थीं और वहाँ से क्षतिपूर्ति के लिए छायाचित्रों की सृष्टि कर रही थीं। आशा के इन स्वप्नों और निराशा के नि छायाचित्रों की काव्यगत समष्टि ही छायावाद कहलाई।”

छायावाद का आविर्भाव

छायावादी काव्य का प्रादुर्भाव कब से माना जाए, इस पर आलोचकों के मत अलग-अलग हैं--

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद के प्रवर्तन का श्रेय मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पांडेय को दिया है।
- इलाचंद जोशी शुक्ल जी के इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद हैं।
- विनयमोहन शर्मा एवं प्रभाकर माचवे ने छायावाद के प्रवर्तन का श्रेय माखनलाल चतुर्वेदी को दिया है।
- रायकृष्णदास ने सुमित्रानंदन पंत को छायावाद का प्रवर्तक घोषित किया है।

कुछ आलोचकों के छायावादी काव्य-प्रवृत्तियों से पूरी तरह संवलित काव्य-रचनाओं का अविच्छिन्न प्रवाह जयशंकर प्रसाद के 'झरना' से स्वीकार किया जाता है।

तटस्थ ढंग से विचार करने पर, मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पांडेय एवं जयशंकर प्रसाद आदि की कविताओं (आरंभिक कविताओं) में छायावादी काव्य का जन्म हुआ, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि की कविताओं में वह गतिशील होकर आगे बढ़ा, प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा आदि की कविताओं में उसका पूर्ण विकसित रूप सामने आया।

छायावाद: काल-नामकरण एवं सामान्य अर्थ

➤ यहाँ रामचंद्र शुक्ल छायावाद को इसाई संतों के छायाभास तथा यूरोपीय काव्य के आध्यात्मिक प्रतीकवाद से जोड़ते हुए, उसे बंगला की काव्यप्रवृत्ति के अनुकरण में विकसित मानते हैं।

➤ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शुक्ल जी के इस मत का पुरजोर खंडन करते हैं तथा बंगला में छायावाद के प्रचलन का विरोध करते हैं।

हिंदी में हम जिसे छायावाद के नाम से जानते हैं, उस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुकुटधर पांडेय के निबंध हिंदी में छायावाद, जो शारदा पत्रिका (सन् 1920) में प्रकाशित हुआ था, में प्रयुक्त हुआ दिखाई देता है। मुकुटधर पांडेय ने छायावादी शब्द का प्रयोग उन कविताओं के लिए किया था, जिनमें उन्हें अस्पष्टता और भावों का धुंधलापन दिखाई पड़ा। इसी वर्ष (सन् 1920) सरस्वती में सुशीलकुमार का भी एक लेख उपर्युक्त नाम से प्रकाशित हुआ। उसके बाद छायावाद नाम चल पड़ा और चर्चित होता गया। परवर्ती कुछ आलोचकों ने व्यंग्यार्थ भी कहा कि जो समझ में न आए, वह छायावाद है।

छायावाद और रहस्यवाद

छायावाद का सामान्य अर्थ प्रतीकवाद से संबद्ध किया जा सकता है। जब हिंदी कविता में प्रतीकों का यथास्थान, यथासंभव अधिकतम प्रयोग किया जाने लगा, तब उसे दुरूह-असहज मानकर प्रतीकवादी कविता या दूसरे अर्थों में छायावादी कविता कहा जाने लगा। कतिपय आलोचक काफी समय तक छायावाद और रहस्यवाद को एक ही मानते रहे हैं, जबकि छायावाद और रहस्यवाद दोनों एक दूसरे के पर्याय नहीं हैं। वैयक्तिक आत्मपरक अनुभूतियों से संवलित प्रतीकात्मकता और अद्वैतभाव की विविध भावभंगिमाओं का सम्मान करनेवाली छायावादी कविता का एक हिस्सा रहस्यवाद से भी संपृक्त है।

छायावाद की कतिपय प्रमुख परिभाषाएँ

आचार्य रामचंद्र शुक्ल : “छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ- प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करनेवाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन।”

जयशंकर प्रसाद : “कविता के क्षेत्र में जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।”

महादेवी वर्मा : “प्रकृति में चेतना का आरोप ,सूक्ष्म सौंदर्य-सत्ता का उद्घाटन एवं असीम के प्रति अनुरागमय आत्मविसर्जन की प्रवृत्तियों का गीतात्मक एवं नवीन शैली में व्यक्त रूप छायावाद है।”

रामकुमार वर्मा : “परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की परमात्मा में, यही छायावाद है।

डॉ. नगेंद्र : “छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।”

छायावादी कविता तथा पाश्चात्य रोमेंटिक काव्य

छायावादी कविता में जिस तरह प्रेम, सौंदर्य, निराशावाद, पलायनवाद, कल्पनाशीलता, भावप्रवणता, कोमलकांत पदावली आदि रोमेंटिक प्रवृत्तियाँ व्यापक रूप से विद्यमान हैं, उनके आधार पर कहा जा सकता है कि छायावादी कविता रोमेंटिक कविता है। साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक विविध परिस्थितियों के कारण यदि साहित्य में उपर्युक्त रोमेंटिक प्रवृत्तियों का बोलबाला हो, तो कविता के उस युग को रोमेंटिक युग कहा जाता है। संभवतः यही कारण हो सकता है कि अँगरेजी कविता में एक पूरा युग रोमेंटिक युग (romantic era) के नाम से है। उसके प्रमुख कवियों वर्ड्सवर्थ, शेली, कीट्स, कालरिज, बायरन आदि की कविताओं में उपर्युक्त रोमेंटिक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं। हिंदी के प्रमुख रोमेंटिक कवियों- प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी इत्यादि की कविताओं में भी कमोबेश वही रोमेंटिक प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं। वस्तुतः छायावाद को हिंदी कविता का रोमेंटिक युग और उसके कवियों (प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी) को हिंदी के प्रमुख रोमेंटिक कवि कहा जा सकता है।

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ / विशेषताएँ

नारी-संवेदना की गंभीर मार्मिक अभिव्यक्ति

खड़ीबोली हिंदी कविता की सर्वप्रमुख विशेषता नारी के प्रति उसकी महान संवेदनादृष्टि को स्वीकार किया जा सकता है, जो द्विवेदीयुगीन कविता से लेकर छायावाद और आगे परवर्ती काव्यसर्जना तक व्यापक रूप में प्रसरित है।

राम की शक्तिपूजा और कामायनी में यह नारी संवेदन पूर्णता और पराकाष्ठा तक व्यक्त हुआ है। पंत और महादेवी की कविताओं में आत्मा-परमात्मा विषयक प्रतीकों में नारी संवेदना के व्यापक चित्र परिलक्षित होते हैं।

सौंदर्य का विस्मयकारी व्यापक चित्रण

सौंदर्य के उत्कृष्ट स्वच्छंद चित्रण में छायावादी कविता का स्वरूप बहुत भव्य और व्यापक है, जिसके अंतर्गत नारी सौंदर्य, मानव सौंदर्य, प्रकृति सौंदर्य, यहाँ तक कि आत्मा के सौंदर्य के साथ ही लौकिक-पारलौकिक सौंदर्य के विविध काव्यचित्र बहुतायत से दृष्टिगत होते हैं। छायावादी कवि प्रकृति के कण-कण में असीम सौंदर्य के दर्शन करता है। छायावाद के सबसे महत्वपूर्ण और ख्यात कवि जयशंकर प्रसाद ने तो उसे चेतना का उज्ज्वल वरदान (उज्ज्वल वरदान चेतना का सौंदर्य जिसे सब कहते हैं) कह कर सौंदर्य की सर्वोपरि सत्ता स्वीकार की है।

निराशा और वेदना की स्वाभाविक गहन विवृति

छायावादी कविता जिस दौर का प्रतिनिधित्व करती है, उस परिवेश में सर्जित काव्य में नैराश्य की अभिव्यक्ति बहुत स्वाभाविक कही जा सकती है। परिणामतः छायावादी कवियों ने निराशा से उपजे अवसाद के कारण अपने काव्यसर्जन में वेदना की गहन अनुभूतियों को सहज रूप में व्यक्त किया है। स्वाभाविक रूप से निराशा और वेदना की अभिव्यक्ति इस काल की कविता की प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में देखी जा सकती है। प्रसाद की कामायनी का आरंभ निराशा और चिंता से होता है, जहाँ वेदना का आधिक्य है। उसके नायक मनु की निराशा और वेदना स्थान स्थान पर व्यक्त हुई है।

महादेवी की अनेक कविताओं में व्यक्त निराशा और वेदना वेदना उन्हें वेदना की ही कवयित्री बनाती है।

निराला जैसे कवियों की 'मैं अकेला' जैसी कविताएं उनकी निराशाभरी भावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति हैं।

प्रकृति का व्यापक, स्वतंत्र एवं सजीव चित्रण

छायावादी कविता की एक सर्वोपरि विशेषता है-- आलंबन रूप में व्यापक और प्रभावी प्रकृति चित्रण। प्रकृति के विविध मनोहारी चित्र खींचने में छायावादी कवियों का मन बहुत रमा है। छायावादी कविता से पूर्व प्रकृति के सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र चित्र कमोबेश द्विवेदीयुगीन कविता को छोड़कर नहीं मिलते। आधुनिककाल से पूर्व प्रकृति के चित्र या तो उद्दीपन रूप में हैं, या फिर रहस्यात्मक, उपदेशात्मक और अलंकृत रूप में विद्यमान हैं। छायावाद में प्रकृति के विशद और हृदयग्राही स्वतंत्र मनोरम चित्र दृष्टिगत होते हैं, जहाँ प्रकृति आलंबन के भव्य आसन पर प्रतिष्ठित है।

पंत तो प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में ही ख्यात हैं।

राष्ट्रीयता का प्रभावी उद्घोष

राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति और देशप्रेम के उदात्त भावों से ओतप्रोत कविताओं का सर्जन आधुनिक हिंदी कविता की एक उल्लेखनीय विशेषता कही जा सकती है। स्वभावतः छायावादी काव्य में राष्ट्रप्रेम एक प्रमुख तत्व के रूप में उभरकर आया है। तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों में पाश्चात्य की व्यापक प्रेरणा और हमारे अपने महान अतीत के स्तवन की आकांक्षा ने हिंदी ही नहीं भारत के सभी प्रमुख भाषाओं के कवियों को राष्ट्रप्रेम विषयक काव्यसर्जन के लिए प्रेरित किया। इस कारण आधुनिक काल में राष्ट्रप्रेम काव्यरचना की प्रमुख राष्ट्रीय प्रवृत्ति के रूप में उभरी।

राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं की सृष्टि सभी छायावादी कवियों ने की हैं। जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत महादेवी की कविताओं में राष्ट्रीयता और देशप्रेम की भावना प्रमुखता से व्यक्त हुई है। अतीत गौरवगान के क्रम में भारत-स्तवन, भारत-वंदना का तीव्र स्वर कमोबेश सभी छायावादी कवियों की रचनाओं में सुनाई देता है। हिमाद्रि तुंग श्रृंग, अरुण यह मधुमय देश, भारत जननी, भारत माता, भारत वर्ष, ग्राम्या के कई गीत आदि इसी राष्ट्रीय भावना का उद्घोष करनेवाली रचनाएँ हैं।

मानवीय दृष्टिकोण

छायावादी कविता की एक अन्य महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, उसकी विशद मानवीय दृष्टि, जिसके अंतर्गत छायावादी कवि विश्वमानव के कल्याण की कामना करता है। संभव है कि इस क्रम में वह रवींद्र और अरविंद के मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया हो। प्रसाद के विजयिनी मानवता हो जाए से लेकर निराला की बादलराग, भिक्षुक, तोड़ती पत्थर, विधवा और पंत के मानव तुम सबसे सुंदरतम आदि कविताओं तक छायावादी कवियों की मानवतावादी भावनाओं को अभिव्यक्त होते हुए देखा जा सकता है। इन कविताओं के माध्यम से विश्वकल्याण, व्यक्तिस्वातंत्र्य, नारी के प्रति संवेदना, सामाजिक उपेक्षा के शिकार आमजन के कल्याण की कामना इत्यादि विविध विषयों में कवियों का विशद मानवीय दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

रहस्यपरक भावनाओं की अभिव्यक्ति

➤ रहस्यपरकता छायावादी कविता की एक प्रधान प्रवृत्ति स्वीकार की जानी चाहिए। अपने मन के गहन अंतर्भाव को व्यक्त करते समय छायावादी कवि असीम-निराकार अज्ञात सत्ता के प्रति रहस्य भावना से भर जाता है।

➤ छायावादी कवि रहस्य भाव को जीवन का स्वाभाविक अंग मानकर चलता है। इसलिए कुछ आलोचकों को छायावाद रहस्यवाद का पर्याय प्रतीत होता है।

आचार्य शुक्ल ने तो इन दोनों को किन्हीं अर्थों में संपृक्त मानकर एक ही माना है।

प्रसाद ने कामायनी में इस रहस्यपरकता को अद्भुत कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है और कामायनी के एक सर्ग का नाम ही रहस्य सर्ग रखा है। पंत प्रकृति के सौंदर्य का सूक्ष्म निरीक्षण करते समय रहस्यमयी अलौकिकता से भर जाते हैं और निराला और महादेवी वर्मा के काव्य में जगह जगह पर रहस्यपरक भावनाओं की व्यापक विवृति देखी जा सकती है।

वैयक्तिक अनुभूतियों का सहज प्रकटीकरण

- छायावादी कवि अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों को बहुत व्यापक रूप में प्रकट करता है।
- छायावाद के सभी प्रमुख कवियों ने अपनी वैयक्तिक गहन अनुभूतियों को आत्मपरक शैली में व्यक्त किया है।
- उन कवियों के वैयक्तिक जीवन की करुणा, निराशा, वेदना, पीड़ा, संघर्ष, द्वंद्व इत्यादि मार्मिक भावनाएँ बहुत सहज- स्वाभाविक रूप में व्यक्त हुई हैं।
- प्रसाद का आँसू उनकी वैयक्तिक अनुभूतियों (इस करुणा कलित हृदय में/परिरंभकुंभ की मदिरा आदि में) की सर्वोत्तम कलात्मक उपलब्धि कही जा सकती है।
- निराला की 'सरोज स्मृति' वैयक्तिक अनुभूतियों की करुण अभिव्यक्ति है।

भाषा का प्रांजल-परिष्कृति-परिनिष्ठित रूप

भाषा की कलात्मक उत्कृष्टता की दृष्टि से छायावादी कविता की तुलना आधुनिक हिंदी कविता में किसी के साथ नहीं की जा सकती। भाषा का कलात्मक वैभव छायावादी काव्य में चरम उत्कर्ष पर दृष्टिगत होता है।

बहुत परिष्कृत, प्रांजल, ललित और कलात्मक रूप छायावादी कविता में दिखाई देता है। मन के गूढ़-गहनतम भावों को अभिव्यक्त करने में छायावादी काव्य की भाषा बहुत सफल कही जा सकती है। कल्पना, प्रेम और सौंदर्य जैसे मधुरतम भावों की कोमलतम अभिव्यक्ति में इस काल की भाषा तदनुरूप भावाभिव्यक्ति में साधिकार समर्थ हुई है। इस समय खड़ीबोली का प्रांजल-परिष्कृत-परिनिष्ठित स्वरूप अपने मोहक स्वरूप में दृष्टिगत होता है। कामायनी, राम की शक्तिपूजा, परिवर्तन, नौकाविहार आदि कविताओं में खड़ीबोली का जैसा प्रवाहपूर्ण स्वरूप दिखाई देता है, उसे छायावादी काव्य की उपलब्धि के रूप में रेखांकित किया जाना चाहिए। परिष्कृत भाषाप्रयोग की दृष्टि से छायावाद बहुत समृद्ध है।

प्रतीकात्मकता का सम्मान

छायावादी कविता में गहन आंतरिक अनुभूतियाँ प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त हुई हैं। कवि अपने हृदय की गहनतम अनुभूतियों को सहज रूप में व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का सहारा लेता है। जहाँ शब्द भावों को व्यक्त करने में समर्थ नहीं हो पाते हैं, वहाँ प्रतीक कवियों के लिए सहायक होते हैं और वह प्रतीकों का सहारा लेने के लिए बाध्य हो जाता है। छायावादी कविता अधिकांशतः भावावेश के क्षणों की अनायास अभिव्यक्ति है, जिसके कारण प्रतीकों की अधिकता छायावादी काव्य की स्वाभाविक विशेषता बन गई है। कमोबेश सभी छायावादी कवियों ने विविध भावों की अभिव्यक्ति के लिए नए-नए प्रतीकों का प्रयोग किया है। जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा तो विशेष रूप से प्रतीकों के लिए ख्यात हैं। निराला और पंत की अनेक कविताओं में नूतन प्रतीकों का प्रयोग हुआ है, जिनसे उनकी काव्याभिव्यक्ति बहुत प्रभावी भावसंपन्न और मर्मस्पर्शी हुई है।

नवीन छंदों का प्रयोग

छायावादी कविता की एक प्रमुख कलात्मक विशेषता है नवीन छंद के प्रति विशेष आकर्षण। नूतन छंदों का प्रयोग छायावादी काव्य की विशिष्ट उपलब्धि कही जा सकती है। छायावाद के प्रमुख स्तंभ निराला ने नव गति, नव लय, ताल, छंद नव/नवल कंठ नव, नव जलद मंद्र रव की भावना से, खुल गए छंद के बंध के उद्घोष के साथ छंदों के अनावश्यक बंधनों को अस्वीकार करते हुए, मुक्तछंद (निराला मुक्तछंद कविता के प्रवर्तक माने जाते हैं, छंदमुक्त कविता के प्रवर्तक के रूप में नहीं) के प्रयोग और प्रचलन का पथ प्रशस्त किया, जिसका सर्वत्र स्वागत किया गया। परवर्ती काल (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि के लिए) में तो मुक्तछंद नवीन भावाभिव्यक्ति के लिए जैसे एक सशक्त माध्यम की तरह स्वीकृत किया गया। मुक्तछंद का पथ प्रसस्त करनेवाले निराला की कविता जूही की कली को इस दिशा में प्रथम अभिधान स्वीकार किया जाता है।

छायावादी काव्य के लिए यह नूतन शिल्पगत प्रयोग एक वरदान की तरह प्रमाणित हुआ। प्रसाद ने स्वयं विविध नूतन – नवीन छंदों का प्रयोग करते हुए कलात्मक काव्याभिव्यक्ति की है। छायावाद के अन्य प्रमुख कवियों पंत और महादेवी वर्मा भी नवीन छंदप्रयोग के आग्रही रहे हैं। नित नूतन छंदप्रयोग से काव्य कलेवर की कोमलतम और मधुरतम प्रस्तुति छायावादी काव्य की मौलिक विशेषता कही जा सकती है।

डॉ. कुमारी सीमा

डॉ. कुमारी सीमा

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

एस. एन. एस. आर. के कॉलेज, सहरसा.

भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

एस. एन. एस. आर. के कॉलेज, सहरसा.

भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा